नमूना प्रश्न पत्र (हिन्दी पाठ्यक्रम ब के लिए)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश –

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए –

(1) प्रश्न-पत्र के दो खंड है – खंड 'अ' और खंड 'ब'।

(2) 'अ' में कुल 9 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए है। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(3) 'ब' में कुल 8 वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

प्र.1 नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(1 × 5 = 5)**

विकास का उद्देश्य लोगों का आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उत्थान है। विश्व में विकास के सम्बन्ध में अलग-अलग विचार है। विकास के पश्चिम अथवा यूरोप केन्द्रित विचार में स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिसका सम्बन्ध आधुनिकीकरण, अवकाश, सुविधा व समृद्धि से जुड़ा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औधोगीकरण, कम्प्यूटरीकरण, उत्कृष्ट परिवहन व्यवस्था, स्वास्थय व शिक्षा की उपलब्धता, वैयक्तिक सुरक्षा इत्यादि को विकास का पर्याय माना जाता है, परन्तु यह विकास का एकतरफा प्रतीक है। मानव विकास एक व्यापक संकल्पना है, जिसमें मानव के लिए स्वस्थ भौतिक पर्यावरण की उपलब्धता के साथ आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक स्वतंत्रता भी समाहित है। इसका लक्ष्य लोगों के उपलब्ध विकल्पों में विस्तार करते हुए शिक्षा व स्वास्थय तक मानव पहुँच सुनिश्चित करना है, ताकि सशक्तीकरण को सार्वभौमिक बनाया जा सके।

साक्षरता मानव के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह ज्ञान व मुक्ति का मार्ग है, परन्तु इसके साथ समाज व पर्यावरण के बारें में भी व्यक्ति को ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि ज्ञान की मुक्ति का मूलाधार है। विकास ने मनुष्य के जीवन में कई परिवर्तन लाए है। मानव विकास का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य सभी मनुष्यों तक विकास के समान लाभ का वितरण करना है, परन्तु भेदभाव, मानवधिकारों का हनन तथा विस्थापन की समस्याओं ने मानव को विकास के वास्तविक लाभ से दूर कर दिया है।

1. प्रस्तुत गद्यांश के आधर पर बताइए कि विकास का संबंध किससे है?

(अ) आधुनिकीकरण से (ब) सुविधा से (स) समृद्धि से (द) ये सभी

2. मानव विकास में किन तत्वों को समाहित किया गया है?

(अ) स्वस्थ भौतिक पर्यावरण को (ब) सामाजिक स्वतंत्रता को (स) आर्थिक समृद्धि को (द) ये सभी

3. मानव के लिए साक्षरता क्यों अनिवार्य है?

(अ) सार्वभौमिकता के लिए (ब) ज्ञान और मुक्ति के लिए (स) विस्थापन के लिए (द) स्वतंत्रता के लिए

4. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

(अ) शिक्षा और मानव (ब) आधुनिकीकरण और मानव

(स) मानव विकास की संकल्पना (द) पश्चिमी संस्कृति और मानव

5. मानव विकास का महत्वपूर्ण उद्देश्य किसे माना गया है?

(अ) शिक्षा का व्यापक प्रसार करना (ब) सभी मनुष्यों तक विकास के समान लाभ का वितरण करना

(स) सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान करना (द) आर्थिक रूप से मजबूत बनाना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अथवा

महिला सशक्तीकरण से महिलाएँ आत्मनिर्भर बनती है, जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं लेती है और परिवार व समाज में अपना स्थान बनाती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिल सशक्तीकरण भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक तथा मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तीकरण में शिक्षा की अहम भूमिका होती है।

ग्रामीण महिलाएँ सदियों से घर तथा खेत में पुरूषों के बराबर ही काम करती है, लेकिन वहाँ उन्हें सामंती सोच के कारण दूसरे दर्जे का नागरिक ही माना जाता रहा है। ग्रामीण समाज की सोच बदलने का वक्त अब आ गया है। महिलाओं की उन्नति के लिए अब गाँवों में कार्य किया जाना चाहिए।

नारी सशक्तीकरण के इस वर्तमान दौर में महिलाएँ केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़ ही नहीं हुई, अपितु समाज एवं परिवार की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने प्रारम्भ हो गए हैं। आज महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं के बल पर आगे बढ़ रही है। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो, राजनीति हो, शिक्षा हो, रोजगार हो, सभी जगह महिलाओं ने अपना परचम फहराया है। वर्तमान समय में लोग बेटियों को बोझ समझकर दुनिया में आने से पहले ही मारें नहीं, इसलिए सरकार ने बहुत सारी योजनाओं जैसे लाड़ली योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं, उड़ान आदि की शुरूआत की है।

1. गद्यांश के आधार पर बताइए कि ग्रामीण महिलाओं को किस तरह का नागरिक माना जाता रहा हैं?

(अ) पहले दर्जे का (ब) दूसरे दर्जे का (स) तीसरे दर्जे का (द) इनमें से काई नहीं

2. महिलाओं की उन्नति के लिए अब कहाँ से कार्य किया जाना चाहिए?

(अ) शहरों से (ब) गाँवों से (स) नगरों से (द) इनमें से काई नहीं

3. गद्यांश के आधार पर बताइए कि वर्तमान में महिलाएँ किसके बल पर आगे बढ़ रही हैं?

(अ) पुरूषों के बल पर (ब) समाज के बल पर (स) स्वयं के बल पर (द) इनमें से काई नहीं

4. गद्यांश के अनुसार वर्तमान में महिलाएँ के लिए सरकार ने कौन कौन-सी योजनाएँ चलाई हैं?

(अ) लाड़ली योजना (ब) बैटी-बचाओ-बेटी पढ़ओं (स) उड़ान (द) ये सभी

5. प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने महिलाओं की किस स्थिति की ओर संकेत किया है?

(अ) वर्तमान स्थिति (ब) प्राचीन स्थिति (स) सामंती सोच (द) इनमें से काई नहीं

प्र.2 नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(1 × 5 = 5)**

शिक्षा हम सभी के उज्जवल भविष्य के लिए एक बहुत ही आवश्यक साधन है। यदि हम समाज में सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो शिक्षा उसका एक आवश्यक स्रोत है, क्योंकि इसके बिना किसी भी स्तर पर कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। सामाजिक क्षेत्रों में बहुत से सुधार करने का प्रयत्न किया गया, परन्तु लोगों में शिक्षा की कमी देखी गई है, जिसके परिणामस्वरूप व्यावहारिक रूप में सुधार प्रभावहीन रह जाते हैं। हमने बाल विवाह, बाल श्रम, दहेज प्रथा तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के लिए बहुत से कानून बनाए, परन्तु विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित अशिक्षा ने इन सुधारात्मक कानूनी उपायों के लगभग नकार दिया है, इसलिए शिक्षा के द्वारा इन बुराईयों को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिससे सामाजिक परिवर्तन को तीव्रता प्रदान की जा सके। देश में पिछड़ी तथा अनुसूचित जातियों का उत्थान, राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता, भाषा सुधार तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया आदि सभी का चलन बहुत धीमा है, इसलिए शिक्षा के द्वारा इनकी सफलता के लिए उचित उपाय प्रदान करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परिवर्तन लाने का सबसे प्रभावी तरीका शिक्षा है। इसके द्वारा लोगों के दृष्टिकोण, व्यवहार रीतियों, जीवन नीतियों तथा मूल्यों में परिवर्तन लाने और उनमें प्रगति करने के लिए इच्छा जागृत की जा सकती है। शिक्षा आधुनिक ज्ञान में वृद्धि करने में सभी सहायक हो सकती है।

1. उपरोक्त दिए गए गद्यांश का उचित शीर्षाकंन कीजिए।

(अ) शिक्षा द्वारा सामाजिक सुधार अपेक्षित (ब) शिक्षा भविष्य की नींव

(स) शिक्षा द्वारा आर्थिक सुधार अपेक्षित (द) इनमें से कोई नहीं

2. शिक्षा के अभाव में किस रूप में सुधार प्रभावहीन रह जाते हैं?

(अ) सामाजिक रूप में (ब) व्यावहारिक रूप में (स) कानूनी रूप में (द) इनमें से कोई नहीं

3. गद्यांश के आधार पर बताइए कि किसका चलन बहुत धीमा हैं?

(अ) पिछड़ी तथा अनुसूचित जातियों के उत्थान का (ब) राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता का

(स) भाषा सुधार तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया का (द) ये सभी

4. शिक्षा के द्वारा क्या संभव हैं?

(अ) लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन (ब) व्यवहार रीतियों में परिवर्तन

(स) मूल्यों में परिवर्तन (द) ये सभी

5. गद्यांश के आधार पर बताइए कि हमने किस सामाजिक बुराई के लिए कानून बनाए?

(अ) दहेज प्रथा (ब) बाल-विवाह (स) बाल श्रम (द) ये सभी

अथवा

श्रम की अवज्ञा के परिणाम का ज्वलंत उदाहरण है - हमारे देश में व्याप्त शिक्षित वर्ग की बेकारी। हमारा शिक्षित युवा वर्ग शारीरिक श्रमपरक कार्य करने से परहेज करता है। वह यह नहीं सोचता कि शारीरिक श्रम परिणामत: कितना सुखदायी होता है। पसीने से सिंचित वृक्ष में लगने वाला फल कितना मधुर होता है। 'दिन अस्त ओर मजदूर मस्त' का भेद जानने वाले महात्मा ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को यह परामर्श दिया था कि तुम केवल पसीने की कमाई खाओगे। पसीना टपकाने के बाद मन को संतोष और तन को सुख मिलता हे, भूख भी लगती है और चैन की नींद भी आती है। हमारे समाज में शारीरिक श्रम न करना सामान्यत: उच्च सामाजिक स्तर की पहचान माना जाता है। यही कारण है कि ज्यों-ज्यों आर्थिक स्थिति में सुधार होता जा रहा है, त्यों-त्यों बीमारों व बीमारियों की संख्या में भी वृद्धि होती जा रही है। इतना ही नहीं, बीमारियों की नई-नई किस्में भी सामने आ रही है। जिस समाज में शारीरिक श्रम के प्रति हेय दृष्टि नहीं होती हैं, वह समाज अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ एवं सुखी होता है।

1. गद्यांश के आधार पर बताइए कि शिक्षित वर्ग की बेकारी का क्या कारण हैं?

(अ) श्रम की अवज्ञा (ब) अत्यधिक श्रमिक होना (स) श्रमपरक कार्य (द) इनमें से कोई नहीं

2. महात्मा ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को क्या परामर्श दिया था?

(अ) हमेशा मस्त रहोगे (ब) केवल पसीने की कमाई खाओगे

(स) संतोष से रहोगे (द) इनमें से कोई नहीं

3. गद्यांश के आधार पर बताइए कि हमारे समाज में शारीरिक श्रम न करना किस स्तर की पहचान मानी गई हैं?

(अ) उच्च सामाजिक स्तर (ब) निम्न सामाजिक स्तर (स) मध्य सामाजिक स्तर (द) इनमें से कोई नहीं

4. आर्थिक स्थिति में सुधार होने पर किसमें वृद्धि होती जा रही हैं?

(अ) बीमारों व बीमारियों की संख्या में (ब) शारीरिक श्रम में

(स) भूख और नींद में (द) इनमें से कोई नहीं

5. गद्यांश के आधार पर बताइए कि शारीरिक श्रम होता हैं

(अ) दु:खदायी (ब) सुखदायी (स) श्रमपरक (द) इनमें से कोई नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.3 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्ही चार भागों के उत्तर दीजिए। **(1 × 4 = 4)**

1. 'यह लड़की अत्यन्त सुशील और परिश्रमी है।' वाक्य में रेखांकित पदबंध हैं

(अ) संज्ञा पदबंध (ब) विशेषण पदबंध (स) क्रिया पदबंध (द) क्रिया विशेषण पदबंध

2. 'नदी बहती चली जा रही हैं।' रेखांकित में पद है

(अ) विशेषण पद (ब) संज्ञा पद (स) क्रिया पद (द) सर्वनाम पद

3. 'अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।' वाक्य में संज्ञा पदबंध है

(अ) अयोध्या के राजा दशरथ (ब) के (स) चार (द) पुत्र थे

4. 'शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम काँप क्यों रहे हो?' रेखांकित में पदबंध है

(अ) सर्वनाम पदबंध (ब) संज्ञा पदबंध (स) विशेषण पदबंध (द) क्रिया पदबंध

5. 'जंग में मरने वाले सैनिक आदरणीय होते हैं।' वाक्य में रेखांकित पदबंध है

(अ) विशेषण पदबंध (ब) क्रिया पदबंध (स) क्रिया विशेषण पदबंध (द) संज्ञा पदबंध

प्र.4 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए - **(1 × 4 = 4)**

1. वाक्य के अंग है-

(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पाँच

2. जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया होतीहै, उसे कहते हैं-

(अ) सरल वाक्य (ब) संयुक्त वाक्य (स) मिश्र वाक्य (द) पूर्णवाक्य

3. 'दीपक के कहा कि वह कल आएगा' वाक्य है-

(अ) सयुंक्त वाक्य (ब) मिश्र वाक्य (स) सरल वाक्य (द) आश्रित वाक्य

4. 'जितना करोगे, उतना ही पाओगों। वाक्य में रेखांकित उपवाक्य है-

(अ) संज्ञा उपवाक्य (ब) मिश्र वाक्य (स) सरल वाक्य (द) आश्रित वाक्य

5. मिश्र वाक्य है-

(अ) बच्चा दूध पीकर सो गया (ब) यह मेरी सीट है और वह आपकी

(स) यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती है (द) अँधेरे के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।

प्र.5 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए- **(1 × 4 = 4)**

1. कर्मधारय और द्विगु समास उपभेद है-

(अ) अव्ययीभाव समास के (ब) बहुव्रीहि समास के (स) द्वंद्व समास के (द) तत्पुरूष समास के

2. कर्म तत्पुरूष समास का उदाहरण है-

(अ) ग्रामगत (ब) नखभिन्न (स) गौशाला (द) नीति-निपुण

3. सप्तर्षि में समास है-

(अ) द्विगु समास (ब) तत्पुरूष समास (स) कर्मधारय समास (द) बहुव्रीहि समास

4. 'चक्रपाणि' का समास-विग्रह है-

(अ) चक्र और पाणि (ब) चक्र वाला पाणि

(स) चक्र है पाणि में जिसके (विष्णु) (द) चक्र के लिए पाणि

5. जिस समास में दोनों पद प्रधान होते है, उसे कहते है-

(अ) अव्ययीभाव समास (ब) द्वद्व समास (स) बहुव्रीहि समास (द) द्विगु समास।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.6 निम्नलिखित चारों भागों के उत्तर दीजिए- (1 × 4 = 4)

1. शेर को सामने देख हमारे _____। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान भरिए-

(अ) प्राण सूख गए (ब) पैर उखड़ गए (स) कान भर गए (द) छक्के छूट गए

2. छत्रपति शिवा जी ने मुगलों के दाँत _____। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

(अ) तोड़ दिए (ब) खट्टे कर दिए (स) हरे कर दिए (द) बजा दिए

3. 'कान खड़े होना' मुहावरे का अर्थ है-

(अ) क्रोधित होना (ब) ध्यानपूर्वक सुनना (स) चकित रह जाना (द) सचेत होना

4. सिपाही को देखते ही चोर _____। रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरा है-

(अ) नौ दो ग्यारह हो गए (ब) तार-तार हो गए (स) हक्के-बक्के रह गए (द) सुध-बुध खो बैठे

प्र.7 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए- (1 × 4 = 4)

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप की चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

1. पद्यांश के कवि है-

(अ) रामधारीसिंह 'दिनकर' (ब) जयशंकर प्रसाद (स) मैथिलीशरण गुप्त (द) महादेवी वर्मा

2. कवि मनुष्य को मृत्यु से न डरने के लिए क्यों कहता है-

(अ) मृत्यु सुखद होती हैं (ब) मानव- जीवन नश्वर होता हैं
(स) मृत्यु स्वागत करने योग्य है (द) मृत्यु मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकती है।

3. जीवन-मरण वृथा है-

(अ) यदि धन प्राप्त न हो (ब) यदि यश प्राप्त न हो (स) यदि सुमृत्यु प्राप्त न हो (द) यदि मृत्यु से डर गए

4. पशु-प्रवृत्ति है-

(अ) जंगलों में घूमना (ब) दूसरों के लिए जीना (स) बाँटकर खाना (द) आप-आप ही चरना

प्र.8 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए - (1 × 5 = 5)

ग्वालियर में हमारा एक मकान था, उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उसकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही और बार-बार नमाज पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. लेखक का मकान कहाँ था–

(अ) मुंबई में (ब) दिल्ली में (स) लखनऊ में (द) ग्वालियर में

2. लेखक के घर में घोंसला किसने बना लिया था–

(अ) चिड़िया ने (ब) गौरेया ने (स) कबूतरों ने (द) मैना ने

3. दूसरा अंडा किससे टूट गया–

(अ) बिल्ली से (ब) लेखक से (स) लेखक की माँ से (द) नौकर से

4. अंडे टूट जाने पर कबूतरों की क्या दशा थी–

(अ) वे चुपचाप बैठे थे (ब) वे ज़ोर–ज़ोर – से चिल्ला रहे थे

(स) वे अंडे तोड़ने वाले पर हमला कर रहे थे (द) वे परेशानी में इधर–उधर फड़फड़ा रहे थे।

5. लेखक की माँ द्वारा किए गए प्रायश्चित में नहीं है –

(अ) कबूतरों का दाना खिलाना (ब) पूरे दिन रोज़ा रखना

(स) दिन–भर रोते रहना (द) बार–बार नमाज पढ़ना

प्र.9 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए – (1 × 5 = 5)

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कंकरियाँ उछालता, कभी कागज़ की तितलियाँ उडाता और कहीं कोई साथ मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं। कभी फाटक पर सवार, उसे आगे–पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे है, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रूद्र–रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल यह होता–कहाँ थे, हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

1. गद्यांश के लेखक है–

(अ) प्रेमचंद (ब) यशपाल (स) लीलाधर मंडलोई (द) सीताराम सेकसरिया

2. लेखक का मन पढ़ाई में नहीं लगता था; क्योंकि–

(अ) वह मंदबुद्धि था (ब) वह आलसी था

(स) उसकी रूचि खेल–कूद से अधिक थी (द) पढ़ाई बहुत कठिन थी

3. कमरे में आते ही लेखक को दिखाई देता है–

(अ) बड़े भाई का सौम्य रूप (ब) बड़े भाई का रूद्र–रूप

(स) मेज़ पर रखा खाने का सामान (द) दीवार पर लगा टाइम–टेबिल

4. भाई साहब लेखक का सत्कार करते थे–

(अ) गले लगाकर (ब) मधुर वचनों से

(स) स्नेह और रोष मिश्रित शब्दों से (द) मधुर मुसकान

5. 'प्राण सूख जाना' मुहावरे का अर्थ है–

(अ) प्यास लगना (ब) प्राण निकल जाना (स) अत्यधिक डर जाना (द) संकट में पड़ जाना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **(2 × 2 = 4)**

(अ) तताँरा-वामीरो की मृत्यु कैसे हुई ?

(ब) वज़ीर अली की क्या योजना थी ? अंग्रेजों के अनुसार क्या वह उसमें सफल हो सकता था ?

(स) मीरा श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

प्र.11 निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- **(4)**

'झेन की देन' पाठ में वर्णित 'टी-सेरेमनी का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए- **(3 × 2 = 6)**

(अ) 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ़्फ़न किस- किसका प्रतिनिधित्व करते है ? इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है ?

(ब) ठाकुरबार जैसी संस्थाओं की ग्रामीण समाज के प्रति भूमिका और कर्तव्यों पर प्रकाश डालिए।

(स) मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल से निलंबित क्यों कर दिया गया ? निलंबन के औचित्य और उस घटना से उभरने वाले जीवन-मूल्यों पर अपने विचार लिखिए।

प्र.13 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए- **(6)**

(अ) समय का सदुपयोग

संकेत - बिंदु - समय का महत्व, समय के सदुपयोग से लाभ, सफलता का आधार।

(ब) संतोष का महत्व

सकेंत बिन्दु- संतोष का महत्व, असंतुष्टि के कारण, लोभ पाप का मूल है, संतोष ही सबसे बड़ा धन।

(स) सादा जीवन उच्च विचार

संकेत बिन्दु : सादा जीवन उच्च विचार का अर्थ, सद्गुणों से प्रसिद्धि, जीवन में सफलता का रहस्य।

प्र.14 अपने क्षेत्र में फैली गंदगी की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। **(5)**

अथवा

किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति की ओर अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया गया हो।

प्र.15 आपका विद्यालय ग्रीष्मावकाश में नोएडा से नैनीताल की यात्रा का आयोजन कर रहा है। छात्र-छात्राओं को सूचित करने हेतु इस यात्रा से संबंधित सूचना तैयार कीजिए। **(5)**

अथवा

आपके नोएडा क्षेत्र में स्वास्थ्य संगठन द्वारा नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। स्वास्थ्य संगठन के सचिव होने के नाते सभी क्षेत्रवासियों को इसकी सूचना प्रदान कीजिए।

प्र.16 किसी ज्वैलर्स की ओर से लगभग 20 से 25 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए। **(5)**

अथवा

फ्रिज बनाने वाली कंपनी की ओर से अपने उत्पाद के लिए 25 से 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्र.17 नीचे लिखी उक्ति को आधार बनाकर एक कथा लिखिए। ''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।'' **(5)**

अथवा

एक मौलिक कथा लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो - ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

1.	1. (द)	2. (द)	3. (ब)	4. (स)	5. (ब)
			अथवा		
	1. (ब)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	5. (अ)
2.	1. (अ)	2. (ब)	3. (द)	4. (द)	5. (द)
			अथवा		
	1. (अ)	2. (ब)	3. (अ)	4. (अ)	5. (ब)
3.	1. (ब)	2. (ब)	3. (अ)	4. (अ)	5. (द)
4.	1. (अ)	2. (अ)	3. (ब)	4. (स)	5. (स)
5.	1. (द)	2. (अ)	3. (अ)	4. (स)	5. (द)
6.	1. (अ)	2. (ब)	3. (द)	4. (अ)	
7.	1. (स)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	
8.	1. (द)	2. (स)	3. (स)	4. (द)	5. (अ)
9.	1. (अ)	2. (स)	3. (ब)	4. (स)	5. (स)

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.10

(अ) पशु पर्व के आयोजन के अवर पर जब वामीरों ने तताँरा को अपने सामने पाया तो वह जोर जोर से रोने लगी। तभी उसकी माँ वहाँ पहँच गई। उसने तताँरा को बहुत बुरा भला कहा। गाँव वालों ने भी तताँरा का विरोध किया। इस अपमान से क्रोधित होकर तताँरा ने अपनी तलवार जमीन में घोंप दी और पूरी ताकत से उसे खींचता चला गया। इससे द्वीप के दो टुकड़े हो गए। एक ओर तताँरा था दूसरी ओर वामीरों, एक दूसरे को पुकारते रहे। तताँरा का कुछ पता नहीं चला। वामीरों भी उसके बिना पागल हो गई। बाद में उसे गाँव वालों ने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन उसका भी कही पता नहीं चला। इस प्रकार दोनों का अंत हो गया।

(ब) वजीर अली की योजना यह भी कि किसी तरह वह नेपाल पहुँच जाए। वहाँ पहुँचकर अफगानी हमले का इंतजार किया जाए अपनी ताकत बढ़ाई जाए और फिर सआदत अली के अवध की गद्दी से उतारा जाए। अवध पर कब्जा करके वह अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाना चाहता था। अंग्रेजों के विचार से वह ऐसा करने में सफल हो सकता था क्योंकि अंग्रेज अपनी पूरी ताकत लगाकर भी उसे पकड़ नहीं पा रहे थे और वह अपने कार्य में जी जान से लगा था।

(स) मीराबाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त हैं। वे हर समय उनके पास रहना चाहती हैं, उनके दर्शन करना चाहती हैं तथा उनकी सभी प्रकार से सेवा करना चाहती हैं। यह कार्य एक चाकर द्वारा ही संभव है। अच्छा सेवक अपनी सेवा से अपने स्वामी को प्रसन्न करके उसक कृपापात्र बन जाता है। मीरा भी अपने आराध्य को प्रसन्न करके उनकी कृपा प्राप्त करना चाहती है, इसीलिए वह उनकी चाकरी करना चाहती है।

उ.11 वह एक छह मंजिला इमारत थी उसकी छत पर दफ्ती की दीवारों से बनी एक सुन्दर पर्णकुटी थी। उसमें सुन्दर चटाई बिछी हुई थी। कुटी के बाहर एक बेडॉल मिट्टी का बरतन था, जिसमें पानी भरा था। लेखक और उसके मित्र ने उसमें हाथ पैर धोए, तौलिये से पोंछे और फिर अंदर गए। अंदर एक चाजीन बैठा था। उसने उठकर दोनों को झुककर प्रणाम किया और आइए, तशरीफ लाइए कहकर स्वागत किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन लाया। उन्हें तौलिये से साफ किया। उसकी इन सभी क्रियाओं में लेखक और उसके मित्र को मधुर संगीत धुन जैसी अनुभूति हो रही थी। वहाँ अद्भूत शांति थी। चायदानी में पानी का खदबदाना भी उन्हें सुनाई दे रहा था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.12

(अ) 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ्फन क्रमश: हिन्दु ओर मुसलमान कौम का प्रतिनिधित्व करते है। इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि सब धर्मो के लोग एक ईश्वर की रचना है। उनमें केवल नाम का भेद है, अन्यथा सब एक ही है। लेखक बताना चाहता है कि धर्म, जाति भाषा और परम्पराएँ अलग होने पर भी देश के हिन्दू और मुसलमान सौहार्द भाव से रह सकते है। पाठ में टोपी हिन्दू है और इफ्फन मुसलमान है। दोनों के परिवार धार्मिक कट्टरवादी हैं, लेकिन फिर भी इन दोनों में गहरी मित्रता है। वे कहानी में भी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। लेखक संदेश देना चाहता है कि यदि इसी प्रकार कट्टरवाद को छोड़कर दोनों कौमों के लोग एक दूसरे के साथ भाईचारे का संबंध जोड़ लें, तो देश में मजहब के नाम पर इंसानियत का खून बहना रोका जा सकता है।

(ब) ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं को ग्रामीण समाज के प्रतिएक महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। किसी भी सामाजिक अथवाधार्मिक संस्था का यह दायित्व है कि वह समाज में व्याप्त स्वार्थ की भावना को दूरकर जन जन में परोपकार का भाव जगाए। समाज में व्याप्त अनाचार, अराजकता, अन्याय, अंधविश्वास और पापाचार को दूरकर जन जन में संतोषएंव धैर्य के भाव जाग्रत करे। हरिहर काका कहानी में भी गाँव के लोगों की ठाकुरबारी से होता था तो वहीं दुखी मन को आश्रय देने का स्थान भी उन्हें ठाकुरबारी ही दिखाई देता था, परन्तु आस्था और विश्वास के इस मंदिर ने हरिहर काका जैसे लोगों के साथ विश्वासघात और दुर्व्यवहार करक्येे दिखा दिया कि बदलते परिवेश के साथ साथ धार्मिक संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार और अपराध के अड्डे बन गई है। ऐसे में ठाकुरबारी के महंत एवं तथाकथित साधु समाज के प्रति जन मानस में घृणा का भाव ही पैदा होता है: क्योंकि समाज उनसे अच्छे और आदर्श आचरण की अपेक्षा करता है। लोभ लालच और षड्यंत्रों में फँसे साधु संतो के इस आचरण सेयुवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। धार्मिक संस्थाओं और समाज की उच्च आदर्शवादिता से उनका विश्वास उठने लगता है, जो किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं हैं।

(स) मास्टर प्रीतमचंद बहुत ही कठोर एवं सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। अनुशासन के लिए विद्यार्थियों की पिटाई करने में उनके मन में तनिक भी दया या संकोच का भाव नहीं आता था। एक बार शब्द रूप याद न हाने के कारण उन्होनें चौथी कक्षा के छोटे छोटे बच्चों को मुरगा बना दिया। हेडमास्टर शर्मा जी ने जब उनका यह अमानवीय व्यवहार देखा तो बहुत क्रोधित हुए और उन्होने पी. टी. साहब को मुअत्तल कर दिया। हमारे विचार से उनका निलंबन उचित था क्योंकि छोटे छोटे बच्चों को शारीरिक दंड देना अमानवीय है। अध्यापक की कठोरता का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और बहुत से बच्चे स्कूल ही छोड़ देते है: अत: हेडमास्टर शर्मा जी ने पी. टी. साहब को मुअत्तल करके सराहनीय कार्य किया।

उ.13

(अ) समय बहुत अमूल्य होता है। सोने, चाँदी, हीरे आदि हर एक चीज़ का मूल्य लगाया जा सकता है लेकिन समय की कोई कीमत नही लगाई जा सकती। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। पैसे-रूपयों को हम बैंक या कहीं और जमा कर सकते हैं। लेकिन समय टिकाऊ नहीं होता और वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता है। वह इतना तीव्रगामी है कि उसे कोई वायुयान तक नहीं पकड़ सकता है। अगर कोई पकड़ सकता है, तो सिर्फ़ वह जो उसकी गतिविधि पर दृष्टि जमाए हुए उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कबीरदास जी ने समय के संबंध में कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परले होयगी, बहुरि करौगे कब।।

अर्थात हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और कार्य आज करना है, उसे तुरंत करना चाहिए जिन्होंने जीवन के एक-एक पल का सदुपयोग किया है, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच सके हैं। समय का सुदपयोग ही सफलता का आधार है। जो व्यक्ति समय का दुरूपयोग करते है, वे हमेशा असफल होते हैं और उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन एक बार चले जाने से उसे फिर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह कभी असफल नहीं होता है। समय ही वह कसौटी है जिस पर मनुष्य के जीवन को परखने से उसकी सफलता और असफलता की परीक्षा होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ब) मनुष्य का मन स्वभाव से बहुत ही चंचल होता है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की लालसाएँ तथा इच्छाएँ उठती रहती है। जिसका कोई अंत नहीं होता है। उसकी एक इच्छा के समाप्त होते ही दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है। जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट होता है वह धनवान है और जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट नहीं होता वह व्यक्ति बिलकुल निर्धन है, चाहे उसके पास सभी साधन क्यों न हों। कबीरदास का कथन है, ''संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी धन मिट्टी के समान है।'' जिस व्यक्ति के पास संतोषरूपी धन आ जाता है, उसे किसी औरधन को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। आज के मानव में दूसरे लोगों को खुश देखकर ईर्ष्या की भावना पैदा होती है। ईर्ष्या की भावना के कारण ही मनुष्य के जीवन में असंतोष देखा जा सकता है। आज के समय में व्यक्ति धन कमाने के चक्कर में बुरे-से -बुरा काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करता है, क्योंकि उसमें पैदा हुआ लालच उसे उसकी बुराई के बारे में सोचने ही नहीं देता। आज का मानव धन के लालच में पड़कर मानव की जगह दानव बन चुका है। हमारे समाज में होने वाले सभी अपराधों के पीछे धन पाने की लालसा ही है। हम लोगों का जीवन और अधिक पाने की लालसा में ही भटकता रहता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं के ऊपर नियंत्रण होता है, वह व्यक्ति तो दुनिया का सारा सुख अपने काबू में कर लेता है। वह निर्धन होते हुए भी सुख का अनुभव करता है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में नही कर पाता, वह व्यक्ति जीवन भर अशांति का जीवन व्यतीत करता है। धन की जितनी अधिक इच्छा होगी, लोभ का उतना ही अधिक जन्म होगा। लोभ पाप का मूल होता है। जो लोग धन से ऊपर किसी भी चीज़ को नहीं मानते हैं, वे धन को प्राप्त करने की इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाते। ऐसे लोग धनी होने पर भी सदा दुखी रहते हैं। इसलिए मन का संतोषी व्यक्ति धनी है। जबकि अंसतोषी व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी निर्धन है।

(स) 'सादा जीवन उच्च विचार' का सामान्य अर्थ यही है कि हमें सादगी से जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा अपनी भावनाओं को महान बनाए रखना चाहिए। महान व्यक्तियों का हमारे देश में अभाव नहीं रहा है। उदाहरणत: आप गांधी जी को ही देख लीजिए, कितनी सादी वेश-भूषा में रहते थे लेकिन अपने महान विचारों से वह संसार में वंदनीय हो गए। ऐसे व्यक्ति संसार में कम होते है, जो जन्म से ही विख्यात होते हैं। अधिकांश ख्याति अपने चरित्र-बल और परिश्रम से ही प्राप्त होती है। कई ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनका जन्म साधारण कुल में हुआ और वह अपने सद्गुणों और परिश्रम से विख्यात हो गए। जीवन में सादगी का समावेश करना तथा तुच्छ विचारों को जीवन से दूर कर देना अपने आप में महान गुण है। सादा जीवन व्यतीत करने वाला विनयशील, शिष्ट और आत्मनिर्भर होता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए सहिष्णुता, साहस, चरित्र-बल आदि गुणों को अपने जीवन में उतारना अति आवश्यक है। ये गुण ही हमारे जीवन को प्रभावित व विकसित करते हैं। वेश-भूषा, रहन-सहन और आचार-विचार का एक स्तर होना चाहिए। बड़ी-से -बड़ी मुसीबतों के आगे भी झुकना नहीं चाहिए। अपने धैर्य को बरकरार रखना चाहिए। धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए तथा अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना चाहिए। अर्थात अपने जीवन को यथा संभव सादा बनाएँ।

उ.14 परीक्षा भवन

कोटा।

दिनांक 20 अगस्त, 20××

सेवा में,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,

कोटा नगर निगम,

कोटा - 000000

विषय :- क्षेत्र में फैली गंदगी के संबंध में।

महोदय,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान आपने क्षेत्र में चारों ओर फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं आदर्श नगर का निवासी हूँ, जो किसी समय सबसे अधिक साफ-सुथराक्षेत्र माना जाता था, किंतु आज इस क्षेत्र की दशा अत्यंत चिंताजनक है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं, जिन पर मच्छर एवं मक्खियाँ भिनभिनाते रहते हैं। जिसके कारण हमारे क्षेत्र में रह रहे लोगों में मलेरिया तथा अन्य बीमारियों के फैलने का खतरा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हमारे क्षेत्र में गंदगी इतनी बढ़ गई है कि क्षेत्र से जाने वाले लोागों को नाक बंद करके निकलना पड़ता है इस कारण लोगों का जीना दूभर हो गया है।

अत: आपसे निवेदन है कि कृपया इस क्षेत्र की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बिना विलंब किए कोई महत्वपूर्ण कदम उठाया जाए। हम सभी क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क. ख. ग.

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली।

दिनांक 23 फरवरी, 20××

सेवा में

श्रीमान संपादक महोदय

दैनिक हिंदुस्तान

नई दिल्ली

विषय दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति से संबंधित।

महोदय

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से दिल्ली सरकार के अधिकारियों काध्यान दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

अत्यंत खेद के साथ मुझे लिखना पड़ रहा है कि दिल्ली में आजकल गुंडागर्दी, बलात्कार, हत्याएँ, लूटपाट, अपहरण जैसी आपराधिक घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। देश की राजधानी दिल्ली 'अमन चैन की राजधानी' न रहकर असामाजिक तत्त्वों व अपराधियों द्वारा निर्मित 'भय व आतंक के वातावरण की राजधानी' बनकर रह गई है। दिन-दहाड़े दुकानदारों से लूट, घरों में चोरी, छोटे बच्चों का अपहरण, लड़कियों से छेड़छाड़ व बलात्कार तो जैसे आम बात हो गई है। सुबह-सुबह समाचार-फ्र देखने पर ऐसा लगता है जैसे दिल्ली में पुलिस का नहीं, बल्कि अपराधियों का नियंत्रण है।

अत: केंद्र सरकार तथा पुलिस के अधिकारियों से मेरा अनुरोध है कि वे इस संबंध मे कठोरतम कार्यवाही करें, जिससे अपराधियों के मन मे कानून के प्रति भय उत्पन्न हो और वे अपराध करने से पहले दस बार सोचें। अपराधियों पर नियंत्रण रखा जाना अत्यंत आवश्यक है।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.15

रागिनी पब्लिक स्कूल, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

यात्रा का आयोजन

सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि हमारा विद्यालय नोएडा से नैनीताल की यात्रा का आयोजन कर रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है-

दिनांक	-	25 फरवरी से 2 मार्च तक।
मूल्य	-	10,000/- प्रति विद्यार्थी
योजना	-	प्रचलित स्थानों पर जाना, पर्वतीय स्थल का आनंद, अन्य आकर्षक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ।

इच्छुक छात्र-छात्राएँ 20 फरवरी तक अपने नाम कक्षाध्यापिका को दे दें।

अध्यक्षा

विद्यार्थी परिषद

अथवा

स्वास्थ्य संगठन, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन

आपके नोएडा क्षेत्र बी-226, सैक्टर-26 में स्वास्थ्य संगठन द्वारा नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन 16 फरवरी, 20×× से 28 फरवरी, 20×× तक किया जा रहा है। इस शिविर के अंतर्गत अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक (डॉक्टर) उपस्थित रहेंगे।

विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय में संपर्क करें।

क, ख, ग

सचिव, स्वास्थ्य संगठन

उ.16

शुद्धता और विश्वास का दूसरा नाम

गोरी ज्वैलर्स

पेश करते हैं सोना एक्सचेंज ऑफर

किसी भी ज्वैलर्स से खरीदे या बनावाए गए गहनों को एक्सचेंज करें और उनके बदले पाएँ एकदम नए गहनें

जल्दी करें ऑफर सीमित है।

पता- दुकान नं 109, दूसरा तल, चाँदनी चौक, दिल्ली। फोन नं- 011-20535XX

अथवा

इलेक्ट्रिकल उत्पादों का निर्माण करने वाली कंपनी रिच किचेन प्रस्तुत करती है आधुनिक तकनीक पर आधारित एक फ्रिज

रिच केचेन

भीषण गर्मी में भी जो दे हमेशा राहत
दूध, फल या सब्जी किसी पर भी नहीं आफत
अत्यंत कम बिजली की खपत करने वाली

'रिच किचेन' फ्रिज

आज ही संपर्क करें- 09808578XXX, 9219076XXX

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.17 **उक्ति का अर्थ** ''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना'' इस उक्ति का अर्थ यह है कि कोई भी धर्म आपस में भेदभाव करने का पाठ नहीं पढ़ाता।

मानव की उस असीम शक्ति में गहरी आस्था हो रहीं है और यह शाश्वत सत्य है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की संतानें है। विभिन्न धर्मो से संबंधित होने के कारण सबकी धर्म संबंधी मान्यताएँ अलग अलग है, परन्तु सबका ध्येय एक ही है, उस परमपिता की प्राप्ति और साथ ही श्रेष्ठ कार्यो द्वारा अमन-चैन की प्राप्ति।

इस उक्ति से संबंधित एक कथा प्रस्तुत है

कथा तीन मित्र थे - राम, असलम और गुरमती। ये सब एक-दूसरे के घर सभी त्यौहारों, उत्सव और विवाह समारोह में सपरिवार सम्मिलित होते थे। उनकी इस एकता से कुछ राजनेता खिन्न थे। वे अपने स्वार्थवश इनमें द्वेष भावना पैदा करने का प्रयास करते और तीनों को उनक धर्म और दंगों से संबंधित बाते बताकर भड़काने की कोशिश करते। ये तीनों थोड़ा विचलित होने लगे। उनका मिलना-जुलना लगभग खत्म हो गया, पर वे द्वेष भावना का शिकार नहीं हुए।

वे एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते थे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि धर्म कभी बाँटता नहीं, बल्कि जोड़ता है। धर्म तो मानवीय पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। तभी ईद के दिन, राम और गुरमीत सपरिवार असलम के घर पहुँचते हैं और सबको ईद की मुबारकबाद देते हैं। कुछ दिन पश्चात् दीपावली के अवसर पर असलम भी सपरिवार गुरमीत और राम के घर मुबारबाद देने आता हैं। तीनों परिवार खुशी-खुशी समय व्यतीत करते हैं तथा मिठाई व पकवानो का आंनद लेते हैं। उपरोक्त घटना ने इस उक्ति को साक्षात् कर दिया।

''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह सीख मिलती है कि धर्म के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। अत: हमें सभी धर्मो का आदर करना चाहिए और मिलजुलकर रहना चाहिए।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'' प्रस्तुत उक्ति का अर्थ हैं - यदि हमारे मन में किसी कार्य के प्रति दृढ संकल्प है, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। यदि हमारे मन ने हार मान ली तो हार निश्चित हो जाएगी और यदि हमारे मन में आत्मविश्वास है, जीतने की इच्छा है तो जी निश्चित होती है। यह उक्ति निम्नलिखित कथा द्वारा स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है।

कथा एक बार की बात है, दो राजाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। जैसा कि होता है कि युद्ध में एक की ही विजय होती है और एक की हार निश्चित होती है।

इस युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। एक राजा इस युद्ध में हार गया। उसे जन-धन की बहुत हानि हुई उसके सैनिक पराजित राजा को ढूँढ रहे थे। पराजित राजा अपना जीवन बचाने के लिए भागा-भागा फिर रहा था। उसने छिपते-छिपाते एक खोह में शरण ली। वह मन से पूरी तरह पराजित हो चुका था। खोह में छिपा हुआ भी वह मानों अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शत्रु की तलवार कभी भी उसका काम तमाम कर देगी। वह इन्ही विचारों में खोया हुआ था कि उसकी नजर एक मकड़ी पर पड़ी, जो खोह के दरवाजे पर जाला बनाने में व्यस्त थी, उसकी कोशिशें बार-बार नाकाम साबित हो रही थी, लेकिन उसने प्रया करना नहीं छोड़ा। राजा ने सोचा कि वह बेकार ही प्रयत्न कर रही है। भला आधार के बिना जाला कैसे बन सकता है, लेकिन थोड़ी देर बाद राजा ने देखा कि मकड़ी जाला बनाने में सफल हो गई। थोड़ी देर में पूर खोह के मुँह पर जाला बनाया जा चुका था। तभी शत्रु सैनिक वहीं आ पहुँच, लेकिन खोह के मुँह पर मकड़ी का जा बना देख लौट गए। करीब आई हुई मृत्यु तो टल गई, पर राजा एक गहरे विचार में पड़ गया। उसने सोचा कि मैं स्वय तन-मन से पराजित था। अत: मैने मकड़ी को ाी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी को भी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी हारी हुई नहीं थी। वह बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई। क्या मैं मनुष्य होकर भी इस मकड़ी से दुर्बल हूँ? उसने अपने मन को मजबूत किया और संकल्प लिया कि वह अपने शत्रुओं का अवश्य पराजित करेगा। वह तुरन्त उस खोह से बाहर आया। अब वह एक हताश-निराश, पराजित राजा नही था, वरन् मजबूत इरादे वाला व्यक्ति था, जिसे हर हाल में विजय पानी थी। उसने अपने साथियों को एकत्रा किया और अंत में अपने शत्रु को हरा कर अपना राज्य पुन: प्राप्त किया। अत: यह सच ही है कि

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मन को मजबूत और दृढ-संकल्प करके कार्य करना चाहिए, तभी हमें सफलता प्राप्त हो सकती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in